Intermediate Music 2018 Set - 2

Model Question

Answer of GROUP - B

Answer any five questions :- $5 \times 2 = 10$

1. राग देश का पूर्ण परिचय दें।

उ० : यह राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है। वादी - रे, सम्वादी - प है, आरोह में ग, ध वर्जित होता है। जाति - औड़व - सम्पूर्ण है एवं गायन-समय - रात्रि का दूसरा प्रहर है।

आरोह - सा रे म प नि सां

अवरोह - सां नि ध प, म ग रे ग, सा

पकड़ - रे म प, नि ध प, म ग रे ग सा

2. सप्तक से आप क्या समझते हैं? उसके कितने प्रकार होते हैं? नाम लिखें।

उ० : क्रमानुसार सात स्वरों के समूह को सप्तक कहते हैं। जैसे - सा, रे, ग, म, प, ध, नि - एक सप्तक कहलाता है।

सप्तक तीन होते हैं -

क) मंद्र सप्तक ख) मध्य सप्तक ग) तार सप्तक

3. राग केदार का आरोह, अवरोह एवं पकड़ लिखें।

उ० : **राग केदार**

आरोह - सा म, म प, ध प, नी ध सां

अवरोह - सां नी ध प, म̄ प ध प म, रे सा

पकड़ - सा म, म प, म̄ प ध प म, रे सा

4. वादी एवं संवादी की परिभाषा लिखें।

उ० : किसी भी राग में बार-बार प्रयुक्त होने वाला मुख्य स्वर 'वादी स्वर' कहलाता है। इसे अंश या जीव स्वर भी कहते हैं।

राग में प्रयुक्त होने वाला, वादी स्वर के बाद द्वितीय महत्वपूर्ण स्वर संवादी कहलाता है।

5. राग बागेश्री के छोटे ख्याल के स्थाई की स्वरलिपि लिखें।

उ० : राग बागेश्री (छोटा ख्याल) तीनताल

स्थाई -

0	3	×	2
सां सां नि नि	ध म प ध	ग ग रे सा	रे ध़ सा सा
अ म वा की	डा ऽ ली को	य लि या ऽ	बो ऽ ले ऽ

सां नि़ ध़ नि़	सा म म म	म ध नी ध	ग ग रे सा
सु न सु न	हू ऽ क उ	ठ त जि या	मो ऽ रे ऽ

6. तीनताल का परिचय लिखें।

उ० : इस ताल में 16 मात्राएँ होती हैं एवं 4-4 मात्राओं के 4 विभाग होते हैं। इस ताल में 3 ताली एवं 1 खाली होती है। पहली ताली 1ली मात्रा, दूसरी 5वीं एवं तीसरी 13वीं मात्रा पर पड़ती है, खाली 9 पर होता है। ताली के लिए क्रमशः × या +, 2 एवं 3 चिन्ह का प्रयोग, खाली के लिए '0' चिन्ह का प्रयोग होता है।

7. एकताल एवं चारताल में अंतर स्पष्ट करें।

उ० : दोनों तालों में मात्रा, विभाग, ताली-खाली एक समान है। परन्तु दोनों तालों के सिर्फ बोलों में अंतर है।

एकताल का ठेका या बोल

×	0	2	0	3	4	×
धिं धिं	धागे तिरकिट	तू ना	क ता	धागे तिरकिट	धी ना	धिं
1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12	1

चारताल का ठेका या बोल

×	0	2	0	3	4	×
धा धा	दिं ता	किट धा	दिं ता	किट तक	गदि गन	धा
1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12	1

8. लय की परिभाषा लिखें।

उ० : गायन, वादन तथा नृत्य में गति को एक समान कायम रखने को लय कहते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं -

क) विलंबित ख) मध्य ग) द्रुत